अमर चित्र कथा

गणेश

संख्या ५०९ ₹३०



तलाश अपनी जड़ों की

जब वे मुड़ कर अपने बचपन के उन दिनों की ओर देखते हैं, जब उनके व्यक्तित्त्व का विकास हो रहा था, तब अनेक भारतीय बड़े स्नेह से अमर चित्र कथा की उन सचित्र पुस्तकों को याद करते हैं, जिन्होंने उनके जीवन में अत्यंत महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। यह एसीके – अमरचित्र कथा ही थीं जिन्होंने उन्हें अपनी भव्य विरासत की पहली झलक दिखलाई थी।

अमर चित्र कथा १९६७ में पेश की गयीं। इस समय चुनने के लिए अमर चित्र कथा की ४०० से ज़्यादा पुस्तकें उपलब्ध हैं। संसारभर में इनकी ९ करोड़ से ज़्यादा प्रतियां बिक चुकी हैं।

अब अमर चित्र कथा की पुस्तकें और भी बड़े पैमाने पर उपलब्ध हैं – भारतभर में १००० + पुस्तक विक्रेताओं के पास। अपने नज़दीकी विक्रेता का पता जानने के लिए यहां लॉग ऑन करें : www.ack-media.com. अगर किसी पुस्तक विक्रेता तक पहुंचना आसान न हो तो आप सभी पुस्तकें हमारे ऑनलाइन स्टोर www.amarchitrakatha.com से खरीद सकते हैं। हम संसारभर में हर जगह पुस्तकें बड़ी जल्दी पहुंचा देते हैं।

हमारे पुस्तकों के भंडार में से आपको अपनी मनपसंद पुस्तक चुनने में आसानी हो, इसके लिए हमने पुस्तकों को पांच वर्गों में विभाजित किया है।

महाकाव्य तथा धार्मिक कथाएं
महाकाव्यों एवं पुराणों की सर्वश्रेष्ठ कहानियाँ

भारतीय साहित्य
भारतीय साहित्य की मनमोहक कहानियाँ

लोक कथाएं तथा हास्य कथाएं
सदाबहार लोक कथाएं, दंत कथाएं तथा विवेक और हास्य से भरी कहानियाँ

शूरवीर
वीर पुरुषों तथा महिलाओं की मन छूने वाली कहानियाँ

दूरदृष्टा
विचारकों, समाज सुधारकों तथा राष्ट्र निर्माताओं की प्रेरक कहानियाँ

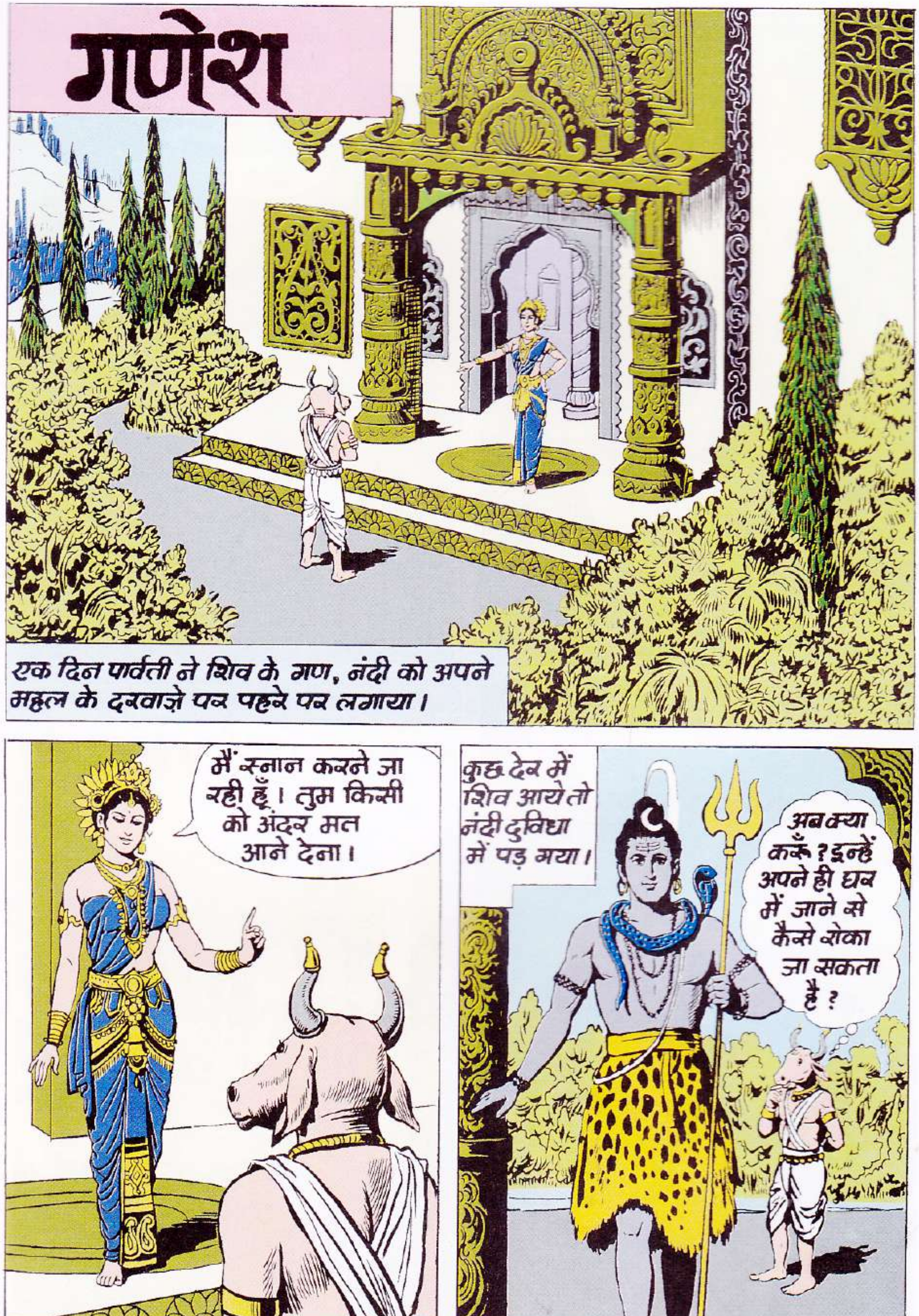
समकालीन साहित्य
भारतीय समकालीन साहित्य की उत्कृष्ठ कहानियाँ

कथा	चित्र	संपादक
कमला चन्द्रकांत	सी.एम्.विटणकर	अनंत पै

मुखपृष्ठ
सी.एम्.विटणकर

Amar Chitra Katha Pvt Ltd

ISBN 978-81-8482-277-9
Published by Amar Chitra Katha Pvt. Ltd., 204, 2nd Floor, Dhantak Plaza, Makwana Road, Gamdevi, Marol, Andheri (East), Mumbai - 400059, India.
For Consumer Complaints Contact Tel : + 91-2249188881/2
Email: customerservice@ack-media.com
Printed in India


गणेश
एक दिन पार्वती ने शिव के गण, नंदी को अपने महल के दरवाज़े पर पहरे पर लगाया।
मैं स्नान करने जा रही हूँ। तुम किसी को अंदर मत आने देना।
कुछ देर में शिव आये तो नंदी दुविधा में पड़ गया।
अब क्या करूँ? इन्हें अपने ही घर में जाने से कैसे रोका जा सकता है?


शिव अंदर चले गये और स्नानगृह तक जा पहुँचे ।
मेरे पतिदेव- यहाँ ? मैंने नंदी से कहा था...
नंदी ने मेरी आज्ञा की अवज्ञा की है। भले ही आप मेरे पति हैं- फिर भी उसने आने क्यों दिया !?
हा ! हा !
शिव को हँसी आ गयी, पर पार्वती नाराज़ हो रही थीं ।
मैं अपना ऐसा गण रखूँगी, जो केवल मेरी आज्ञा का पालन करेगा ।
उन्होंने यह बात अपनी सहेलियों से कही ।
तुम ठीक कहती हो। इनमें से कोई भी गण तुम्हारा अपना नहीं है ।


एक सहेली ने उपाय बताया।
तुम एक ऐसा गण क्यों न बना डालो, जो केवल तुम्हारे प्रति निष्ठावान हो ?
विचार अच्छा है। यही करूँगी।
पार्वती ने अपने शरीर के उबटन के चंदन से एक बालक की रचना की।
बालक इतना सुंदर बना कि वे स्वयं अपनी रचना देखती रह गयीं।
कैसा सुंदर है! और बलवान भी दिखता है!


पार्वती ने उसे आभूषणों से सजाया और आशीर्वाद देकर बोली –
तुम मेरे पुत्र हो। केवल तुम्हीं को मैं अपना कह सकती हूँ।
आज्ञा दो, माँ, मैं आपकी क्या सेवा करूँ ?
यह दंड लो और मेरे साथ आओ।
पार्वती उसे द्वार पर ले गयीं।
यहाँ खड़े रहो। मेरी अनुमति के बिना किसी को अंदर मत आने देना।
कुछ देर बाद –
यह लड़का कौन है ? इसे पहले कभी नहीं देखा !


लड़के ने शिव को रोका तो वे आश्चर्य में पड़ गये।
ठहरो! मेरी माता की आज्ञा बिना कोई भी अंदर नहीं जा सकता।
शिव चकित रह गये।
मूर्ख बालक, जानता नहीं मैं कौन हूँ ? हट जा रास्ते से!
बालक ने बिना कुछ कहे शिव पर दंड से प्रहार किया।
शिव को क्रोध हो आया।
मूर्ख, मैं शिव हूँ – पार्वती का पति! तेरा यह साहस कि मुझे मेरे ही घर में आने से रोके!


परंतु बालक ने दंड उठाकर फिर शिव पर प्रहार किया ।


तब शिव अपने गणों से बोले –
यह मूर्ख कौन है ? यहाँ क्या कर रहा है ? इसे निकाल बाहर करो ।

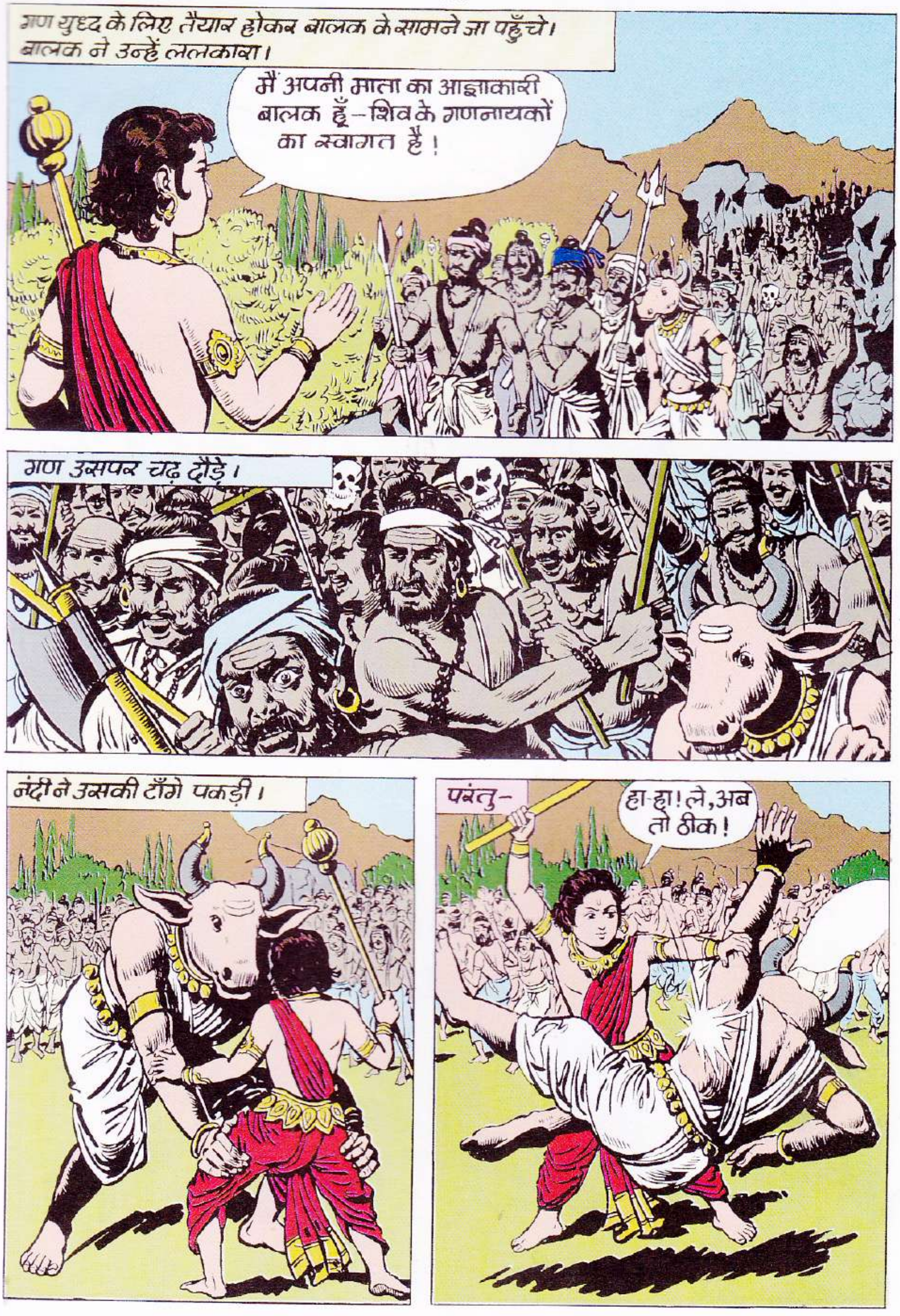

शिव चले गये और गण बालक के पास पहुँचे ।
भाग जाओ, नहीं तो एक-एक को बता दूँगा कि कितना बल मुझमें है !
तुझे अपनी जान प्यारी हो तो भाग जा तू !
यह मत भूल कि हम शिव के गण हैं !


बालक थोड़ी देर को चुप रह गया। वह सोचने लगा।
शिव मेरी माता के पति हैं। मैं क्या करूँ? गणों का सामना करूँ कि न करूँ?
पार्वती ने कोलाहल सुनकर एक सहेली को बाहर भेजा।
बाहर जाकर देखो यह कोलाहल कैसा है।
सहेली ने लौटकर बताया –
वे तुम्हारे पुत्र को धमका रहे हैं। उनकी चल गयी तो तुम्हारी हेठी हो जायेगी।
पार्वती कुछ देर के लिए सोच में पड़ गयीं।
शिव हैं तो मेरे पति...


परंतु उन्होंने आने के लिए ज़बरदस्ती क्यों की ? ठीक है– तो फिर जो होना होगा, होने दो।
उन्होंने अपनी सहेली को फिर बाहर भेजा।
मेरे पुत्र से कहना कि वह किसी से भी दबे नहीं।
सहेली बाहर आयी।
कुमार, तुम्हारी माता ने कहा है कि तुम किसी को मत आने देना।
अब बालक के मन में कोई शंका नहीं रही। वह गणों से बोला –
मैं पार्वती का पुत्र हूँ। तुम शिव के गण हो। तुम शिव की आज्ञा का पालन करो – मैं माँ के आदेश का पालन करूँगा।


मैं फिर कहता हूँ, शिव मेरी माता की आज्ञा के बिना अंदर नहीं जा सकते।
अब गण दुविधा में पड़ गये।
यह पार्वती का पुत्र है। अब हम क्या करें? इसे निकाल दें तो शिव को बुरा नहीं लगेगा?
वे शिव के पास पहुँचे।
भगवन्, वह पार्वती का अपना पुत्र है – आपको आने नहीं देगा।
पार्वती, तुमने अति कर दी। अब मेरे पास कोई उपाय नहीं है।


गणों को वापस बुला लूँ तो मैं पत्नी का दास कहलाऊँगा ! गणों को लड़ना ही होगा !
वे गणों से बोले —
तुम मेरे गण हो और पार्वती का पुत्र भी मेरा है। इसलिए उससे लड़ना तुम्हें उचित नहीं लगेगा ...
...परंतु यदि हमने चुनौती स्वीकार नहीं की तो उसका उल्टा अर्थ लगाया जायेगा। जाकर उससे लड़ो। उसे हराना कठिन नहीं है।


गण युध्द के लिए तैयार होकर बालक के सामने जा पहुँचे। बालक ने उन्हें ललकारा।
मैं अपनी माता का आज्ञाकारी बालक हूँ–शिव के गणनायकों का स्वागत है!
गण उसपर चढ़ दौड़े।
नंदी ने उसकी टाँगे पकड़ी।
परंतु–
हा-हा! ले, अब तो ठीक!

अब बालक लोहे की गदा उठाकर लगा उसे घुमाने ।




अनेक गण मारे गये।
जो बचे वे सिर पर पाँव रखकर भागे।
बालक फिर द्वार पर जा खड़ा हुआ।
उधर ब्रह्मा, विष्णु और इंद्र ने यह घटना सुनी तो उन्होंने नारद मुनि से बात की।
तुम्हें शिव जी की सहायता करनी चाहिए।

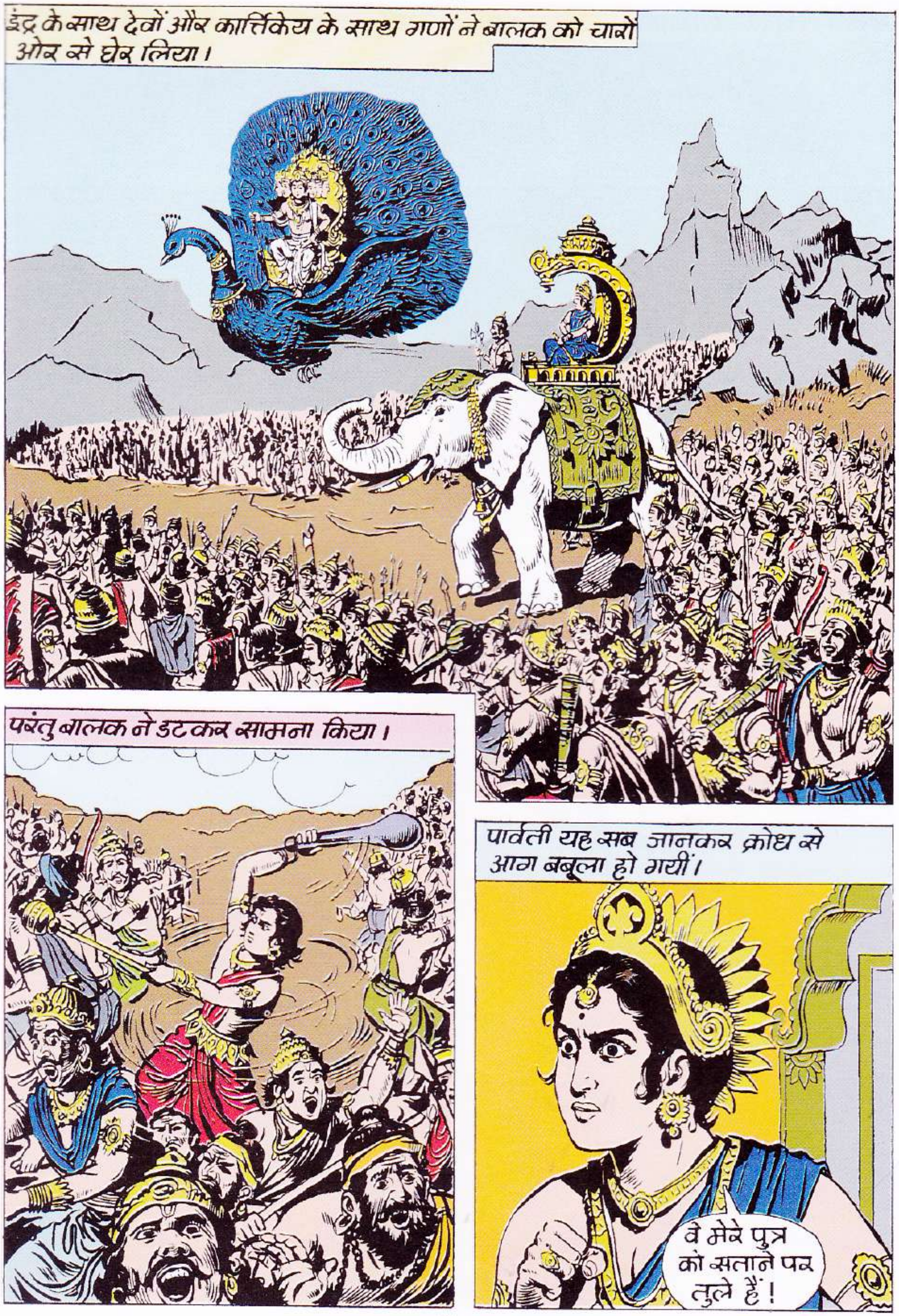

उन्होंने जाकर शिव को प्रणाम किया।
भगवन, हम आपकी सेवा में उपस्थित हैं।
शिव ने सारी बात बतायी।
...और उसका यह साहस कि मुझे मेरे ही घर में जाने से रोके!
ब्रह्मा, जाओ और उसे वश में करो।
मैं ब्राह्मण का भेष धरकर जाता हूँ।
ब्रह्मा अनेक ऋषि-मुनियों को साथ लेकर चले।

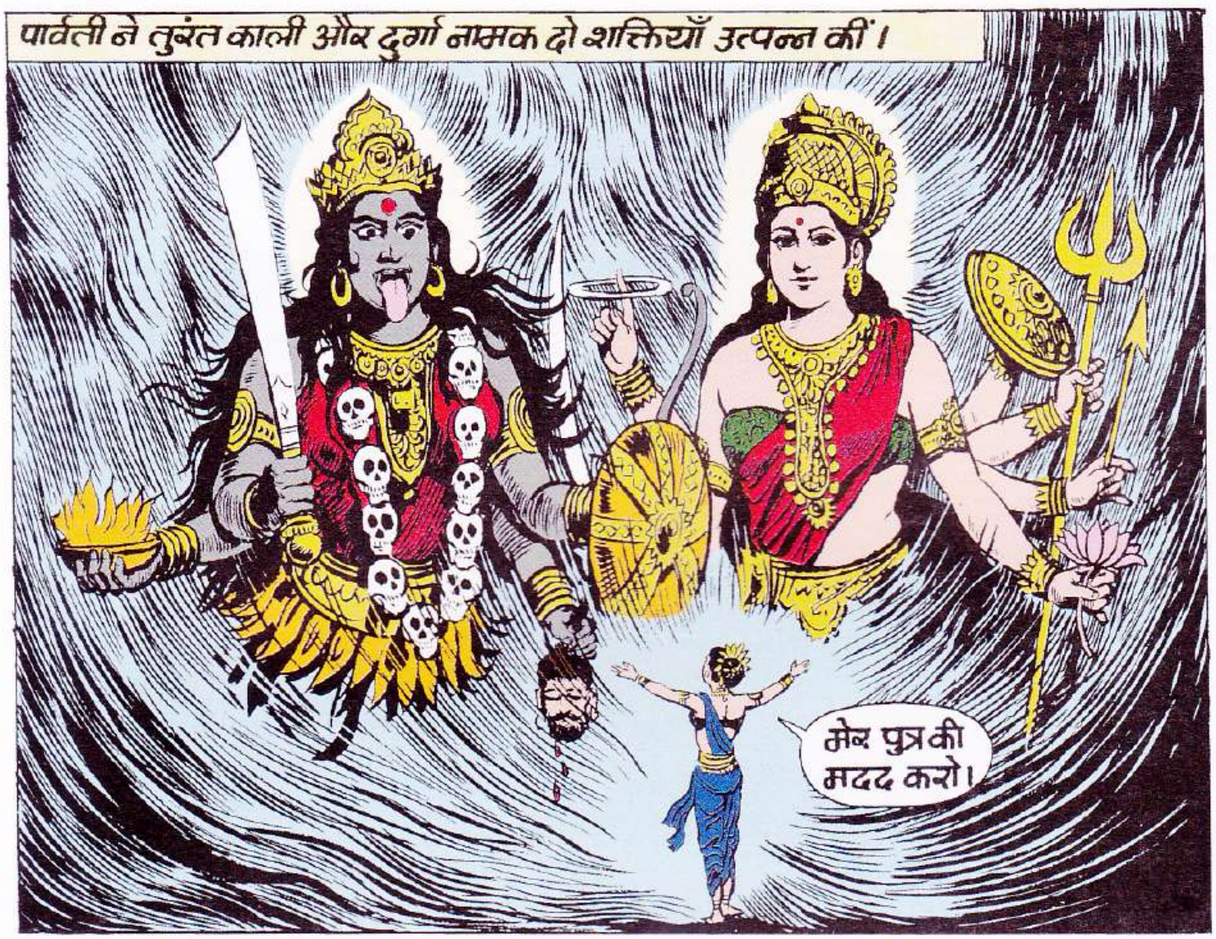

वे जैसे ही निकट आये, बालक झपटा –
ऐसी सीख दूँगा कि कभी भूलोगे नहीं !
ब्रह्मा अचकचा गये।
मैं लड़ने नहीं – शान्ति के उद्देश्य से आया हूँ। मेरी बात तो सुनो !
परंतु बालक गदा उठाकर घुमाने लगा।


भाग जाओ। मैं माता की आज्ञा का उल्लंघन नहीं होने दूँगा।


उधर ऋषि-मुनि शिव के पास आये।
बाल बहुत बढ़ चुकी है। बालक का नाश करना होगा।


शिव ने अपने पुत्र, कार्त्तिकेय और देवराज इंद्र को बुलाया।
गणों और देवताओं को लेकर युध्द करो और धृष्ट बालक का नाश कर दो।


इंद्र के साथ देवों और कार्त्तिकेय के साथ गणों ने बालक को चारों ओर से घेर लिया।
परंतु बालक ने डटकर सामना किया।
पार्वती यह सब जानकर क्रोध से आग बबूला हो गयीं।
वे मेरे पुत्र को सताने पर तुले हैं!


पार्वती ने तुरंत काली और दुर्गा नामक दो शक्तियाँ उत्पन्न कीं।
मेरे पुत्र की मदद करो।


काली बालक और शत्रुओं के बीच जा खड़ी हुई और शत्रु के शस्त्रास्त्र निगलकर...


...वापस शत्रु पर चलाने लगीं।


दुर्गा ने विद्युत का रूप धारण किया…
… और वे शत्रु के शस्त्रास्त्र को, बालक तक पहुँचने से पहले ही, नष्ट कर देतीं।
दोनों शक्तियों ने शत्रु के एक भी अस्त्र को बालक की गदा के पास फटकने तक नहीं दिया।


इंद्र और देवता हताश होकर बैठ गये।


यहाँ तक कि कार्त्तिकेय की भी एक नहीं चली, जिन्होंने अजेय तारकासुर का वध किया था।

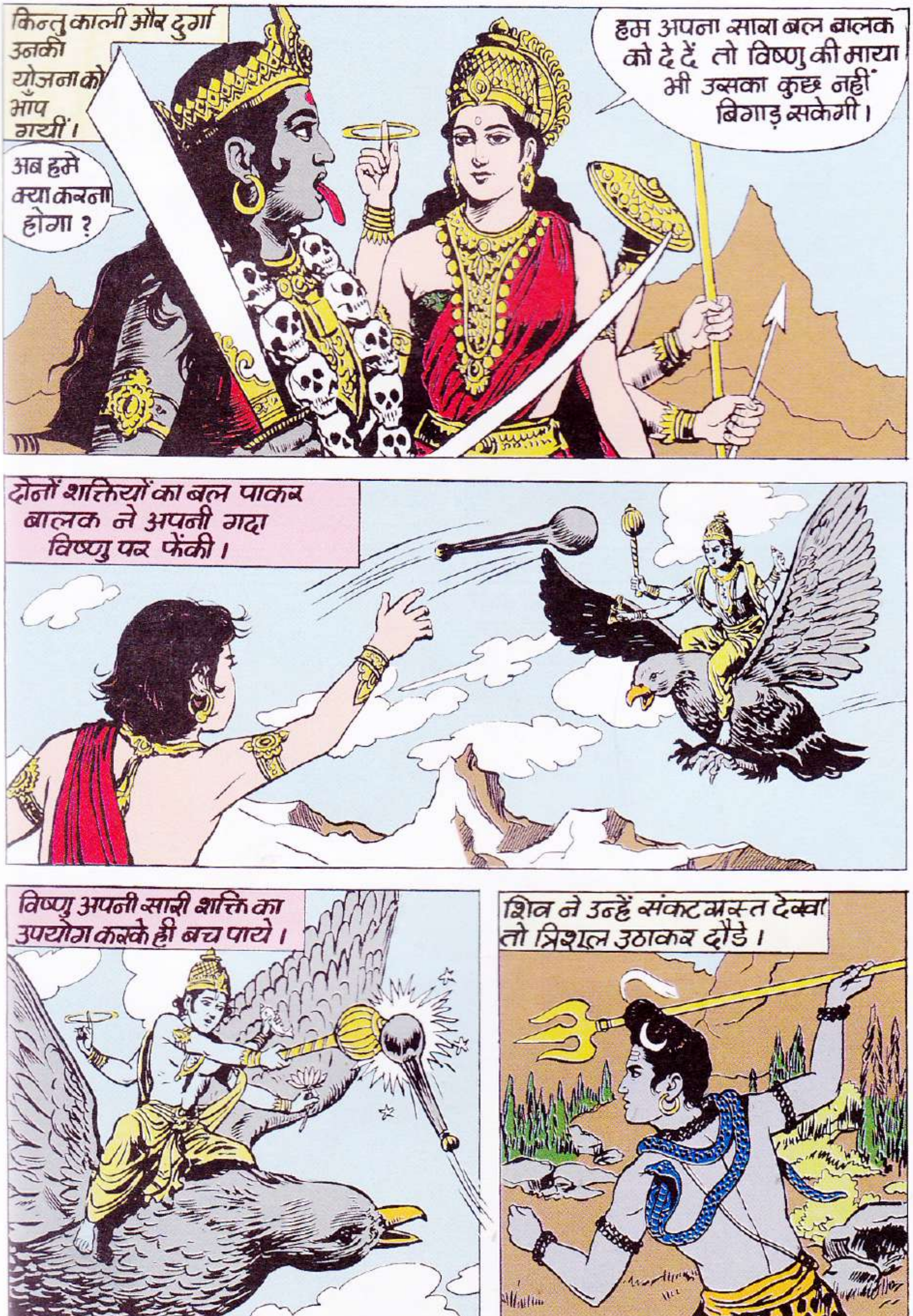

उन्होंने विचार किया।
अब क्या उपाय करें ?
फिर शिव के पास चलना चाहिए।


भगवन्,
हमने अनेक युध्द लड़े हैं और सुने हैं परंतु ऐसा वीर न देखा, न सुना !


इस प्रशंसा से शिव का क्रोध और भड़क उठा ।
मुझे अपने हाथों से उसका नाश करना होगा ।


आगे-आगे शिव चले – उनके पीछे और सब ।


शिव को देखकर भी बालक विचलित नहीं हुआ और देवता उसके हाथों धराशायी होने लगे।
बालक का युध्द-कौशल देखकर शिव चकित रह गये!
बालक अजेय है! यह छल से ही मारा जायेगा। मैं अवसर देखकर वार करूँगा।
यही उपाय विष्णु को सूझा। उन्होंने शिव से कहा —
आप अनुमति दें तो मैं अपनी माया की शक्ति से इसके साथ युध्द करूँ।
ठीक है। दूसरा कोई उपाय नहीं।


किन्तु काली और दुर्गा उनकी योजना को भाँप गयीं।
अब हमें क्या करना होगा ?
हम अपना सारा बल बालक को दे दें तो विष्णु की माया भी उसका कुछ नहीं बिगाड़ सकेगी।
दोनों शक्तियों का बल पाकर बालक ने अपनी गदा विष्णु पर फेंकी।
विष्णु अपनी सारी शक्ति का उपयोग करके ही बच पाये।
शिव ने उन्हें संकटग्रस्त देखा तो त्रिशूल उठाकर दौड़े।

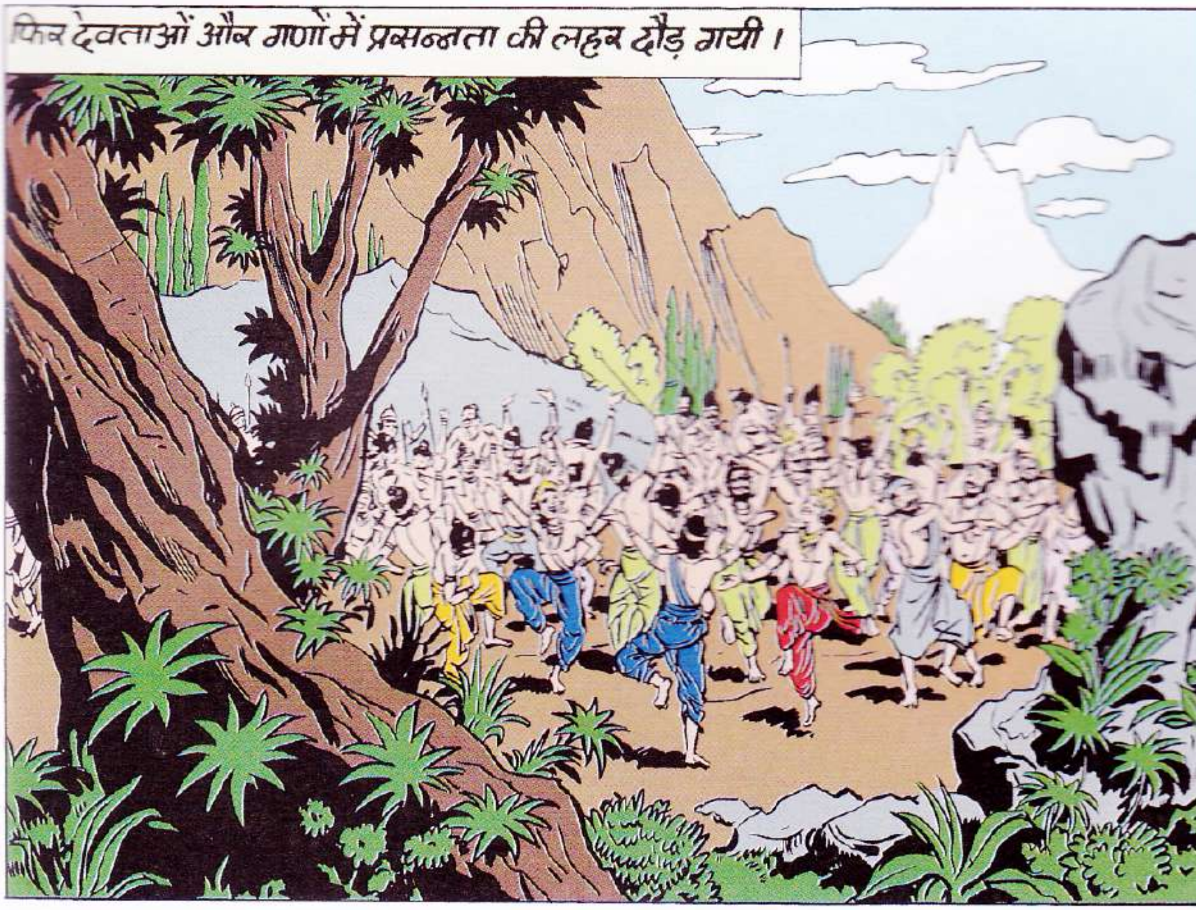

परंतु–
तब शिव ने धनुष उठाया।
बालक ने गदा के वार से धनुष को तोड़ दिया।
गण कुछ कर नहीं पाये तो इसमें क्या आश्चर्य !
अगले ही क्षण–
फिर आ गये !


बालक ने गदा उठायी...
...परंतु विष्णु के चक्र ने उसे काट डाला।
बालक ने अपने हाथ के टुकड़े को उनपर फेंका...
...परंतु गरुड़ ने उसे चोंच में थामकर अपने स्वामी को बचा लिया।


तब बालक ने विष्णु पर वार करने के लिए दंड उठाया। शिव ने उसी समय पीछे से ...

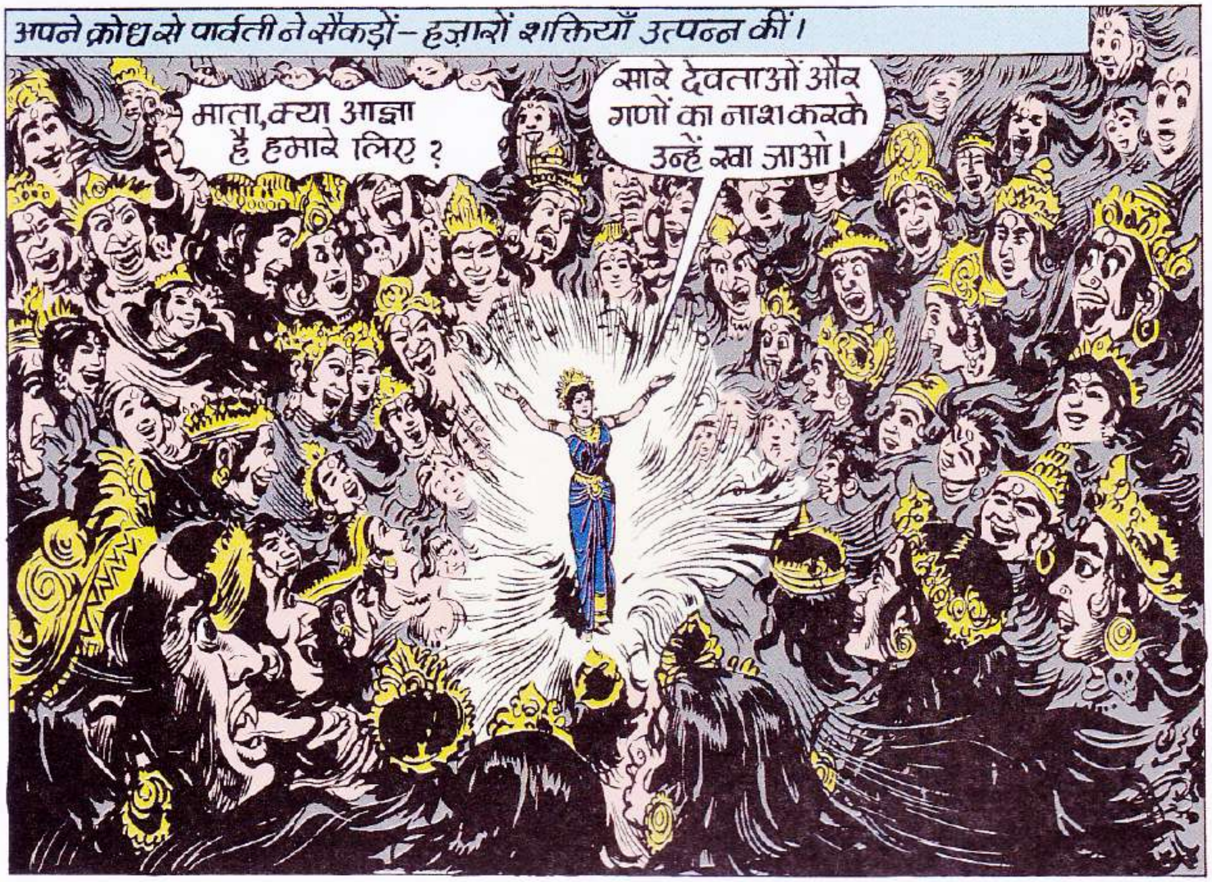

... उसका शीश काट दिया।


क्षणभर के लिए सब लोग स्तब्ध होकर उस वीर योद्धा को देखते रह गये।


फिर देवताओं और गणों में प्रसन्नता की लहर दौड़ गयी ।

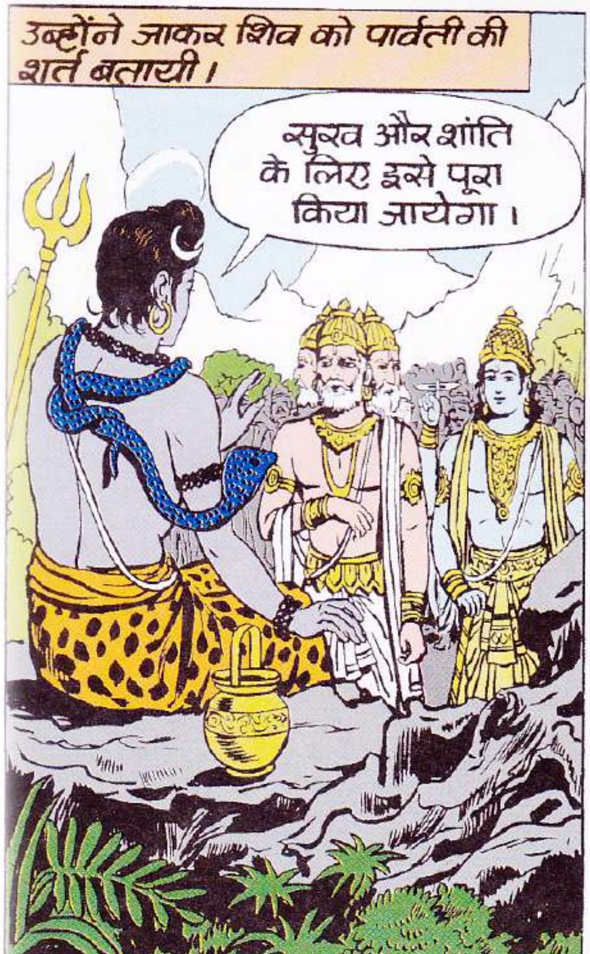

किन्तु शिव सोच में पड़ गये ।
मैंने क्या कर डाला! कैसे पार्वती के सामने जाऊँगा? उसने बालक की रचना की इससे वह मेरा भी पुत्र हुआ ।

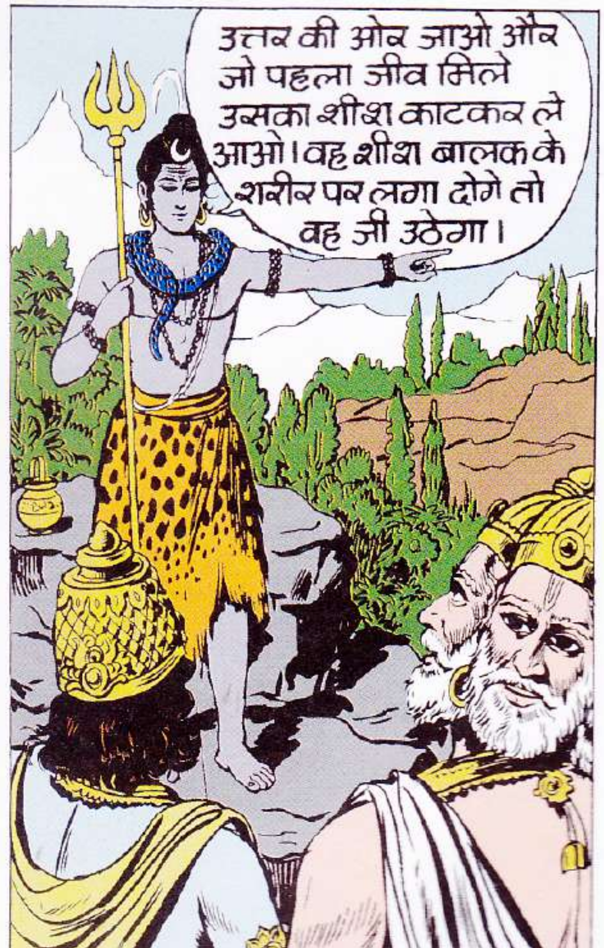

उधर पार्वती को पुत्र की मृत्यु की सूचना मिली ।
मेरे पुत्र को छल से मारा है। सारे देवताओं और गणों को अपने प्राणों से इसका बदला चुकाना होगा!

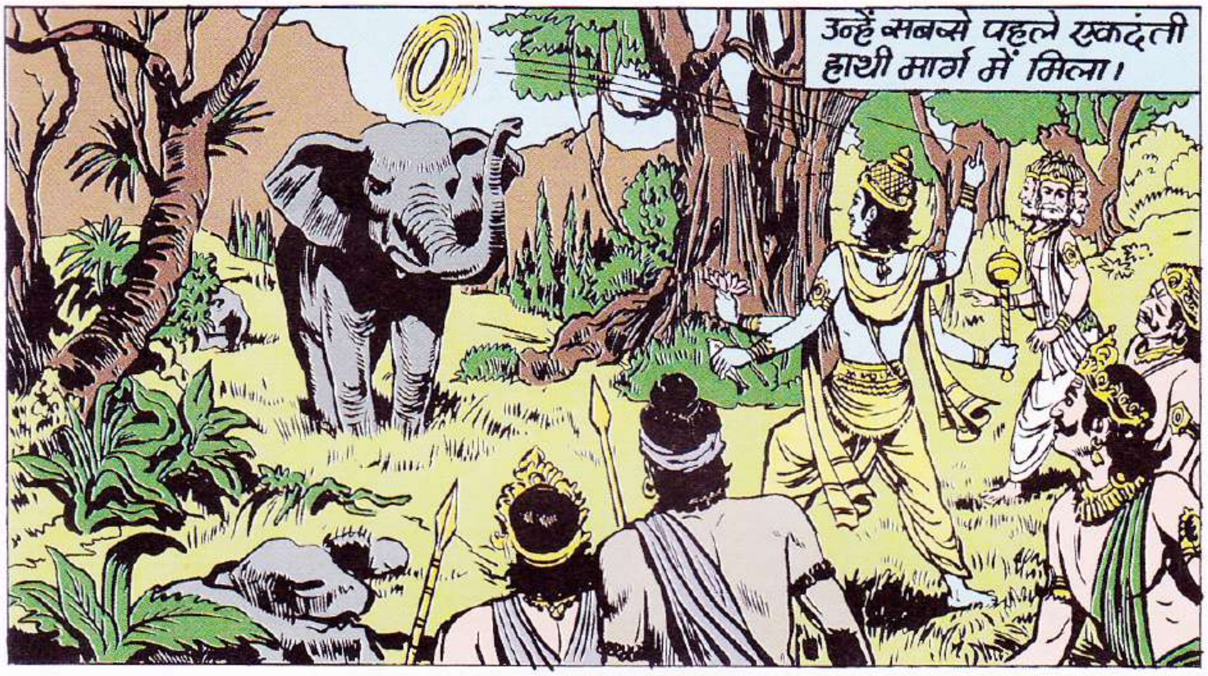

अपने क्रोध से पार्वती ने सैकड़ों – हज़ारों शक्तियाँ उत्पन्न कीं।
माता, क्या आज्ञा है हमारे लिए ?
सारे देवताओं और गणों का नाश करके उन्हें खा जाओ।

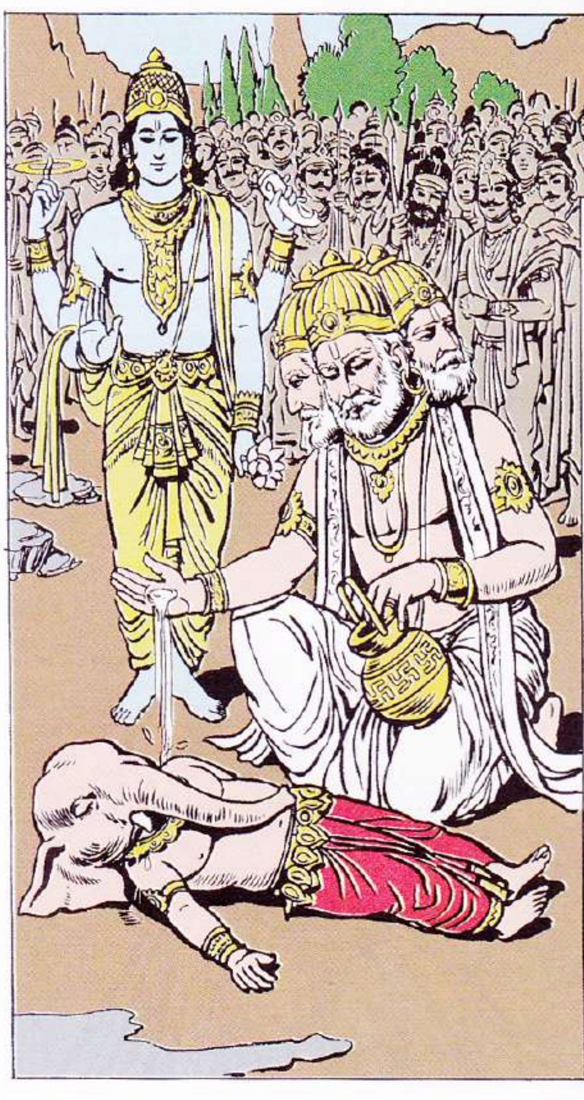

शक्तियाँ गणों और देवताओं का भक्षण करने लगीं। ब्रह्मा और विष्णु बड़े भयभीत हुए।
पार्वती को शांत करना होगा।

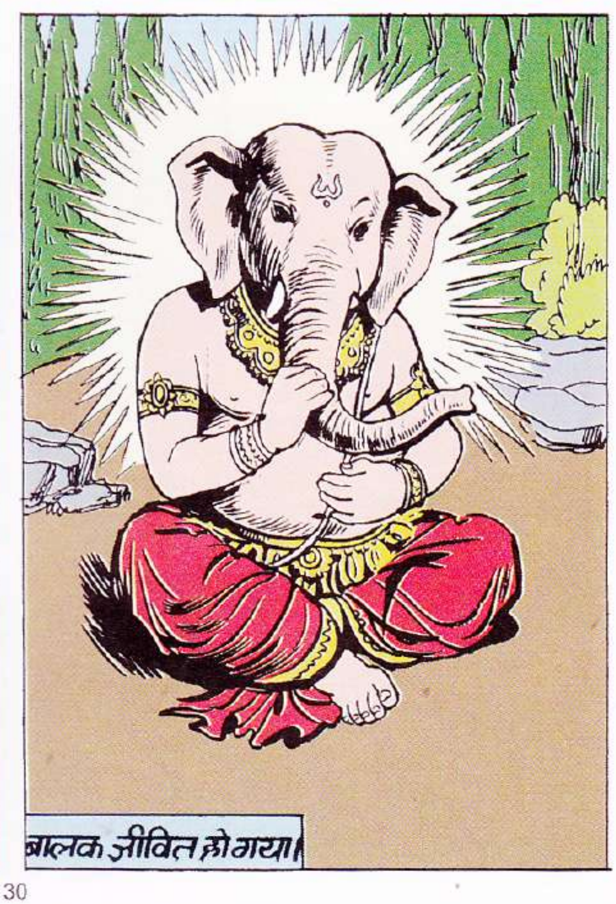

उन्होंने पार्वती की स्तुति की और दया की भीख माँगी।
महादेवी, हमपर दया करो। आप जो कहें, हम वही करने को तैयार हैं। हमें क्षमा करो।
क्षमा करूँगी। पहले मेरे पुत्र को फिर से जीवित करना होगा और उसे देवताओं में मान का स्थान देना होगा।


उन्होंने जाकर शिव को पार्वती की शर्त बतायी।
सुख और शांति के लिए इसे पूरा किया जायेगा।

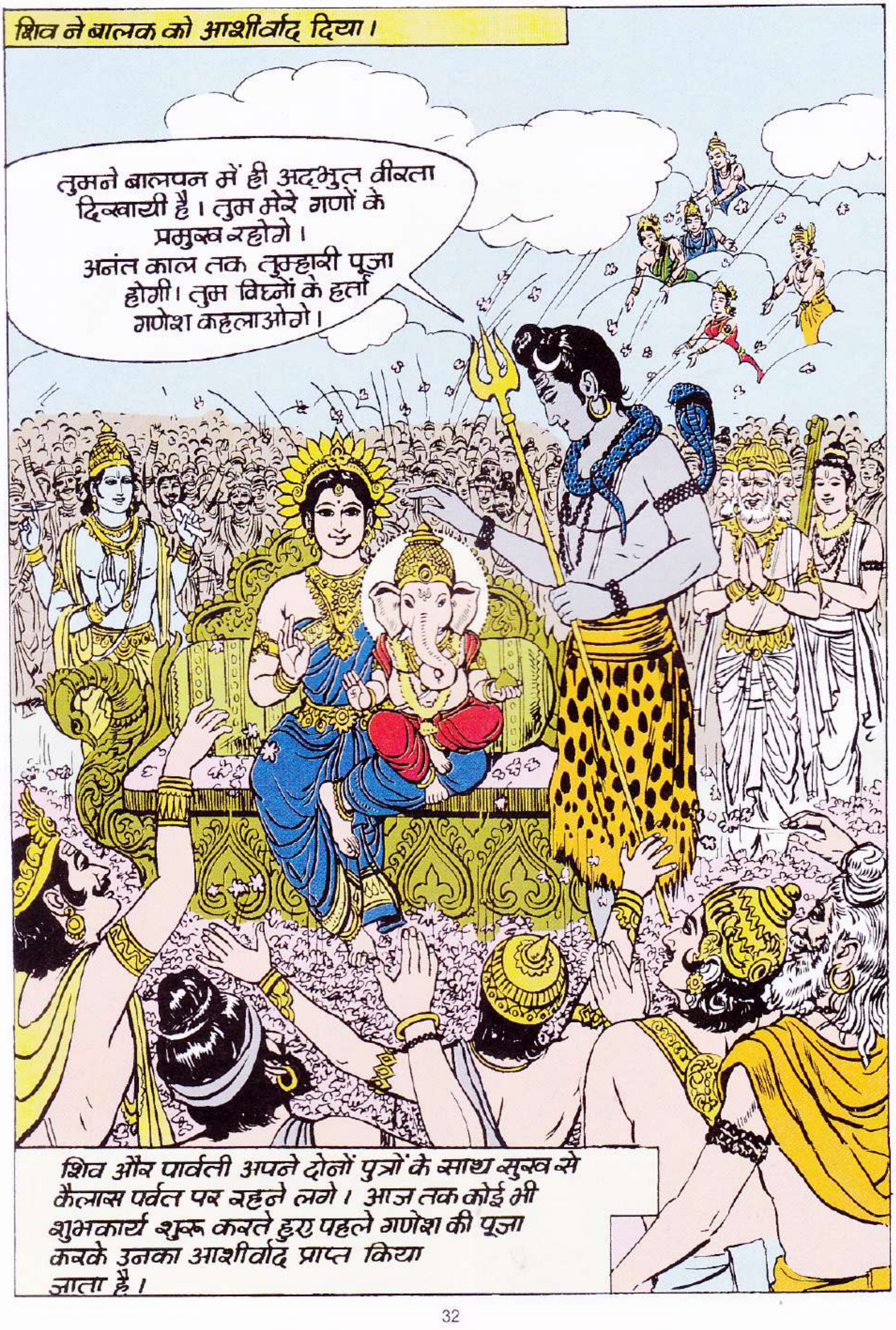

उत्तर की ओर जाओ और जो पहला जीव मिले उसका शीश काटकर ले आओ। वह शीश बालक के शरीर पर लगा दोगे तो वह जी उठेगा।


उन्हें सबसे पहले एकदंती हाथी मार्ग में मिला।


उन्होंने उसका सिर लाकर बालक के धड़ से जोड़ दिया।


बालक जीवित हो गया।


देवता प्रसन्न होकर बालक को पार्वती के पास ले गये, परंतु पार्वती को पूर्ण संतोष नहीं हुआ।
इसको पद कौन-सा मिलेगा?
उसी समय इंद्र आदि देवता शिव को लेकर वहाँ आये।
शिव पार्वती के सामने सिर न उठा सके
मुझे क्षमा करो, पार्वती। गर्व करना पुरुष का स्वभाव है। यह वीर बालक मेरा दूसरा पुत्र होगा।



शिव ने बालक को आशीर्वाद दिया।
तुमने बालपन में ही अद्‍भुत वीरता दिखायी है। तुम मेरे गणों के प्रमुख रहोगे। अनंत काल तक तुम्हारी पूजा होगी। तुम विघ्नों के हर्ता गणेश कहलाओगे।
शिव और पार्वती अपने दोनों पुत्रों के साथ सुख से कैलास पर्वत पर रहने लगे। आज तक कोई भी शुभकार्य शुरू करते हुए पहले गणेश की पूजा करके उनका आशीर्वाद प्राप्त किया जाता है।

महाकाव्य और पौराणिक कथाएं

गणेश

भारत में विघ्नहर्ता के रूप में पूजे जाने वाले गणेश अत्यंत ही आज्ञाकारी पुत्र हैं। माता के आदेश का पालन करते हुए ये पार्वती पुत्र किसी को भी द्वार के भीतर प्रवेश करने की अनुमति नहीं देते। यहां तक कि भगवान शिव को भी भीतर जाने से रोकते हैं। पिता-पुत्र के बीच हुई इस भिडंत का लाभ था -गजमुख, बुद्धिदाता गणेश का उद्भव।

ISBN 978-81-8482-277-9